❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
194वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव
एवं **ऋषि बोधोत्सव** की
हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 41, अंक 15 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 जनवरी, 2018 से रविवार 4 फरवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती

194 वाँ

जन्मोत्सव

फाल्गुन कृष्ण दशमी विक्रमी सम्वत् 2074 तदनुसार शनिवार, 10 फरवरी, 2018

दशहरा ग्राउण्ड
श्री निवासपुरी,
नई दिल्ली-65

ऋषि पर्व

रामलीला मैदान
रोहिणी, सै.7,
नजदीक पुलिस स्टेशन, दिल्ली-85

के अवसर पर

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

कार्यक्रम

यज्ञ : सायं 3.15 बजे
भजन संध्या एवं मार्गदर्शन : सायं 4.15 बजे से

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान; विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष; विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
ओ. पी. वर्मा, प्रधान; सुशील आर्य, मन्त्री — आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी
ओ.पी. यजुर्वेदी, प्रधान; चतरसिंह नागर, महामन्त्री — दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल
नरेशपाल आर्य, प्रधान; संजीव आर्य, मन्त्री — आर्यसमाज रोहिणी सै.-7
सुरेन्द्र आर्य, प्रधान; जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री — उ.प. दिल्ली वेद प्र. मंडल

उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल हेतु

19वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

रविवार 4 फरवरी, 2018 प्रातः 10 बजे से

स्थान : आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक, नई दिल्ली-58

समस्त प्रतिभागी अभिभावकों सहित समय पर पधारें। जो आर्य परिवार अभी तक पजीकरण नहीं करा सकें हैं उनके लिए सम्मेलन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की व्यवस्था उपलब्ध रहेगी। -कृष्ण बवेजा, प्रधान, आ.स.

20वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन : 6 मई, 2018 : आर्यसमाज कीर्ति नगर

पंजीकरण आरम्भः शुल्क 300/- रु. मात्र। पंजीकरण फार्म सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर उपलब्ध है। - एस.पी. सिंह, संयोजक (दिल्ली)

तिथियां परिवर्तित

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन

यज्ञः प्रातः 9:30 बजे **उद्घाटन** – प्रातः 11 बजे **ऋषि लंगरः** 1 बजे

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त आर्य जनों की सूचनार्थ है कि आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली के लिए क्रय किए गए भवन – के.- 1046 का उद्घाटन समारोह किन्हीं कारणों से 4 फरवरी से स्थगित होकर **रविवार 11 मार्च**, 2018 को निश्चित किया गया है। कार्यक्रम प्रातः 9:30 बजे यज्ञ के साथ आरम्भ होगा।

अतः आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं अपना सहयोग प्रदान करें। जल्दी ही सभा के निर्देशन में आर्यसमाज के इस नए भवन का निर्माण कार्य आरम्भ किया जाएगा।

– विनय आर्य, सभा महामन्त्री रामभरोसे आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज

इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्लीः 25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान; प्रकाश आर्य, मन्त्री — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
महाशय धर्मपाल, प्रधान; सतीश चड्डा, महामन्त्री — आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

वेद-स्वाध्याय

जय विजय के प्रदाता परमात्मा

स इन्महानि समिथानि मज्मना कृणोति युध्य ओजसा जनेभ्यः।
अधा चन श्रद्धधति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम्।। - ऋ. 1/55/5
ऋषिः **सव्य आङ्गिरसः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - **सः इत्** = वह इन्द्र ही **युध्यः** = योद्धा होकर **मज्मना ओजसा** = अपने पवित्रकारक ओज से **महानि समिथानि** = बड़े-बड़े संग्रामों को **जनेभ्यः** = मनुष्यों के लिए **कृणोति** = करता है, परन्तु लोग **अधा चन** = अनन्तर ही, पीदे से ही **त्विषीमते इन्द्राय** = उस महातेजस्वी इन्द्र में **श्रद्धधति** = श्रद्धा करते हैं, जोकि **वधम्** = संसार के सब वध को, सब हिंसा को **वज्रं निघनिघ्नते** = वज्र मारता है, अपने वज्र से हनन किया करता है।

विनय- किसी लड़ाई में, किसी जीवन-संघर्ष में, जब मनुष्य को विजय मिलती है तो वह फूला नहीं समाता है। वह समझता है मेरे शस्त्र-बल की या तपोबल की विजय हुई, परन्तु संसार के सब महासंग्रामों के विषय में जो सच्चा रहस्य है, उसे विरले ही मनुष्य समझते हैं। सच तो यह है कि संसार की सब सच्ची (अन्तिम) विजय परमात्मा की ही विजय है। हम अधिक ज्ञान-प्रकाश में होकर देखें तो हमें दीखेगा कि वह परमेश्वर ही महायोद्धा होकर हम मनुष्यों के लिए सब संग्रामों को लड़ रहा है। मनुष्य की स्वार्थमयी आसुरी प्रवृत्ति के कारण संसार में सब लड़ाइयों के प्रसंङ्ग उपस्थित हो रहे हैं ओर जगदीश्वर की दैवी शक्ति उसे अन्त में विजित करके उसे शान्त कर रही है। मनुष्य की न्यूनता पर परमेश्वर की पूर्णता विजय पा रही है। हमें जो यह दीखता है कि बहुत-से मनुष्य सत्य के पक्ष में महासंग्राम लड़ रहे हैं, असल में सत्य प्रेमी मनुष्यों के लिए स्वयं भगवान वह युद्ध कर रहे होते हैं और अतएव उसमें विजय अवश्यंभावी होती है। परमात्मा का पवित्रताकारक ओज ही लड़कर जगत् में सदा विजयी हो रहा है। सत्य के लिए युद्ध करने वालों को तो सदा समझना चाहिए, स्पष्ट देखना चाहिए कि उनका योद्धा स्वयं जगदीश्वर है, जगदीश्वर ही है (सः इत्), अहंकार से विमूढ़त्मा हुए मनुष्य यूं ही अपने को योद्धा और विजयी समझते हैं अन्त में जब उनका अहंकार का पर्दा हटता है और जगद्-व्यापक ज्योति मिलती है तभी उन्हें इस वास्तविक सत्य में श्रद्धा जमती है। तब उन्हें पाप के विजयी होने का भी भ्रम नहीं होता, क्योंकि उन्हें तब इन युद्धों की महत्ता (महानि समिथानि) स्पष्ट दिखाई देती है, अतः अधूरे युद्ध में पाप की क्षणिक विजयों से वे भ्रम में नहीं आते, उनकी श्रद्धा में तनिक भी धक्का नहीं लगता। अपने उस निर्बाध व्यापक प्रकाश में उन्हें सब संग्रामों का यह सच्चा रूप दृष्टिगोचर हो रहा होता है कि एक ओर मनुष्यों के स्वार्थ दूसरों के नाना प्रकार से हिंसन (वध) करने के रूप में उठ रहे हैं, परन्तु जहां तक उनको स्वाधीनता है वहां तक उठकर वे सब दूसरी ओर महातेजस्वी इन्द्र के ओज के सामने नष्ट होते जा रहे होते हैं-इन्द्र का पापवर्जक, कर्मफल देनेवाला वज्र उनके वध का ही वध करता हुआ सदा समता स्थापित कर रहा है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

भगवती साईं जागरण या मनोरंजन की दुकान

आर्यसमाज द्वारा घोषित 'अंधविश्वास निरोधक वर्ष-2018' पर विशेष

....शायद कुछ लोग मेरे विचारों से सहमत न हों, मुझसे रुष्ट हो जाएं, भला-बुरा कहें। हो सकता है कि वे ही सही हों। पर मैं तो अपने मन की ही कह सकता हूँ। जो देखता आया हूँ, जो देख रहा हूँ, वही कह सकता हूँ। जैसे-जैसे देश में धर्म के नाम पर अनुष्ठानों में वृद्धि होती जा रही है वैसै-वैसे देश में धर्म की स्थिति कमजोर होती जा रही है। हालांकि भारत के अनेक कथित धर्म गुरु, सोशल मीडिया पर धर्म रक्षक, बड़ी ही बुलंद और ऊंची आवाज में इस बात को नकारने की कोशिश करते हैं और ऐसा करते हुए उनके चेहरे पर आई चमक और आत्मविश्वास से ऐसा लगता है कि बिना कुछ किए-धरे उनके सिंहनाद से हिन्दू धर्म पूरे ब्रह्मांड की धुरी बन जायेगा।. ...मुझे तो ऐसा लगता है कि ऐसे तेवर अपनी जिम्मेदारियों से भागने का सबसे आसान तरीका है। संकट को स्वीकार ही न करो। जब संकट है ही नहीं तो उससे निपटने के लिए कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं। जागरण के नाम पर अश्लील गीत गाओ, अनुष्ठान करो, हलवा-पूड़ी खाओ।.....

बसंत पंचमी का पावन पर्व था। पटना के मशहूर बी.एन. कॉलेज में एक तरफ जहां कुछ छात्र मां सरस्वती की पूजा करने में व्यस्त थे तो वहीं दूसरी तरफ कॉलेज हॉस्टल के कुछ छात्र रात भर अश्लील गानों पर डांस करते रहे। सरस्वती पूजा के नाम पर पूरी रात अश्लील गानों पर नंगा नाच हुआ अर्धनग्न युवतियां छात्रों के बीच स्टेज पर ठुमकती रही और कुछ छात्र अपने हाथ में ली हुई बंदूक से फायरिंग करते रहे। आपको बता दूँ कॉलेज में हर साल इस तरह के आयोजन होते हैं जहां सरस्वती पूजा के नाम पर अपने मनोरंजन का साधन ढूंढ़ते हुए बार-बालाओं का नाच करवाया जाता है।

हिन्दी के महान कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की सरस्वती वंदना पर एक प्रसिद्ध कविता है-''वर दे वीणावादिनी! वर दे। प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव, भारत में भर दे। वर दे वीणावादिनी! वर दे।'' सरस्वती वंदना के इस गीत की जगह यहाँ भोजपुरी, हिन्दी भाषा में अश्लील गीतों का बोलबाला रहा। हालाँकि धर्म के नाम पर मनोरंजन का यह पहला वाक्या नहीं है। हमारे देश में आज कल यह काम धड़ल्ले से जारी है। एक बड़ा वर्ग इसे धर्म का हिस्सा बताकर मन्त्रमुग्ध है उनकी माने से जागरण से ही धर्म रक्षा हो रही है। बाहर सांस्कृतिक कार्यक्रम लिखा जाता है अन्दर कुछ अलग ही संस्कृति चलती है।

चलो कुछ देर शेष भारत की बात छोड़ दी जाये और अकेली राजधानी दिल्ली की बात करें तो फ्लाई ओवर, के नीचे, चौराहों के इर्द-गिर्द लटके बोर्ड जिन पर लिखा होता है ''सोलहवां माँ भगवती जागरण'' मशहूर गायक फलाना, तो कहीं 21वां साईं जागरण, जिसमें स्थानीय नेताओं की फोटो भी चिपकी होती है। कहीं-कहीं तो सौवां विशाल भगवती जागरण लिखा भी दिखता है। मतलब अब जागरण के साथ विशाल शब्द लिखा जाने लगा। कभी कोई यह समझे कि छोटा-मोटा जागरण हो!

जागरण की इस मनोरंजन भरी रात पर शोध करें तो इसमें आपको धर्म, ईश्वर भक्ति के अतिरिक्त इसमें बाकी सब कुछ दिखाई देगा। रात्रि जागरण अमूमन स्कूलों, गलियों या मेन रास्तों के आस-पास होता हैं, एक बड़ी, साथ में कुछ छोटी मूर्तियाँ होती हैं। इसके बाद बड़े-बड़े स्पीकर और श्रृंगार से सजे-धजे गायक, गायिका आते हैं पूरी रात गीत-संगीत चलता है। तेज आवाज पर लोग नाचते हैं। जिस देवी-देवता के नाम से जागरण होता है शायद वह इन थिरकते गीतों से खुश हो जाता होगा? सुबह को, लाइट, टेंट, वाले से लेकर गायक आदि अपना-अपना मेहनताना लेकर चले जाते हैं।

हालाँकि अब जागरण का छोटा रूप भी चल रहा है जिसे 'माता की चौकी' कहा जाता है। जागरण पूरी रात का होता है, चौकी यह दो घंटे की तारा रानी की कथा के साथ संपन्न हो जाती है। ये आप छह से नौ, नौ से बारह या बारह से तीन के टाइम में करा सकते हैं। बिल्कुल मूवी के शो की तरह। कनाडा से चलने वाली साइट देवी मंदिर डॉट कॉम पर जाइये दुर्गा सप्तशती में लिखा है कि अगर लोग साल में एक बार माता की चौकी लगायें तो उन्हें धन मिलेगा, काबिल बच्चे होंगे और बाधाएं दूर हो जाएंगी। यह बिल्कुल गृह क्लेस, सौतन, दुश्मन से छुटकारा, खोया प्यार, मनचाहा प्यार, पांच मिनट में जमीन विवाद सुलझाने वाले बंगाली बाबाओं की ही बड़ी फर्म है। जो अनपढ़ है उनके लिए रूहानी, बंगाली बाबा हैं और जो पढ़े लिखे हैं उनके लिए ये अंधविश्वास से भरी ये साईटे हैं।

जागरण मण्डली भी कई तरह की होती हैं किसी के पास सिर्फ गायक होते हैं, किसी के पास अच्छा तेज आवाज वाला डीजे साउंड सिस्टम, तो किसी के पास सारा जुगाड़ एक जगह ही मिल जाता है, वह बस पूछ लेते हैं नाचने वाले लड़के चाहिए या लड़कियां? किसके नाम से कराना है मसलन भगवती, साईं, सरस्वती या दुर्गा? यदि कोई साईं जागरण कराता है तो इसके बाद शिरडी वाले साईं बाबा की जयकार गूंजती रहेगी महाभिषेक के साथ ही फूल बंगला, छप्पन सत्तावन भोग सजाकर, जमकर जयकारे लगाए जाते हैं। अगले दिन अखबार के किसी छोटे से कोने में खबर होती है कि फला जगह जयघोषों की गूंज और भक्ति से सराबोर भक्तों के नृत्य से समूचा वातावरण साईमय नजर आया। भजन-संगीत और देर शाम से रंगीन रोशनी में नहाए पंडाल में भक्त जमकर झूमे। फला जगह से पधारे गायक ने भक्तिगीतों से श्रद्धालुओं को सराबोर कर दिया।

अब शायद कुछ लोग मेरे विचारों से सहमत न हों, मुझसे रुष्ट हो जाएं, भला-बुरा कहें। हो सकता है कि वे ही सही हों। पर मैं तो अपने मन की ही कह सकता हूँ। जो देखता आया हूँ, जो देख रहा हूँ, वही कह सकता हूँ। जैसे-जैसे देश में धर्म के नाम पर अनुष्ठानों में वृद्धि होती जा रही है वैसै-वैसे देश में धर्म की स्थिति कमजोर होती जा रही है। हालांकि भारत के अनेक कथित धर्म गुरु, सोशल मीडिया पर धर्म रक्षक, बड़ी ही बुलंद और ऊंची आवाज में इस बात को नकारने की कोशिश करते हैं और ऐसा करते हुए उनके चेहरे पर आई चमक और आत्मविश्वास से ऐसा लगता है कि बिना कुछ किए-धरे उनके सिंहनाद से हिन्दू धर्म पूरे ब्रह्मांड की धुरी बन जायेगा।

मुझे तो ऐसा लगता है कि ऐसे तेवर अपनी जिम्मेदारियों से भागने का सबसे आसान तरीका है। संकट को स्वीकार ही न करो। जब संकट है ही नहीं तो उससे निपटने के लिए कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं। जागरण के नाम पर अश्लील गीत गाओ, अनुष्ठान करो, हलवा-पूड़ी खाओ। अगर कोई इसका कारण जानना चाहे तो उसे आर्य समाजी, नास्तिक, फलाना ढिमका कहकर हडकाओं यह शब्द संवाद की रीत इनके शिष्य पूरे मनोयोग से पालन करते हैं। अब सवाल यह है यदि लोग भगवान को खुश करने के लिए यह सब करते हैं तो क्या भगवान भी दुखी रहते हैं? यदि नहीं तो अपने स्वयं के मनोरंजन को धार्मिक मंच देकर अश्लील गानों पर थिरकना कहाँ तक उचित है?

- सम्पादक

डार्विन सिद्धांत का सच : क्या बन्दर ही इन्सान के पूर्वज थे?

....वर्ष 2008 में विकासवाद के समर्थक जीव-विज्ञानी स्टूअर्ट न्यूमेन ने एक साक्षात्कार में कहा था कि नए-नए प्रकार के जीव-जंतु अचानक कैसे उत्पन्न हो गए, इसे समझाने के लिए अब विकासवाद के नए सिद्धांत की जरूरत है। जीवन के क्रम-विकास को समझाने के लिए हमें कई सिद्धांतों की जरूरत होगी, जिनमें से एक होगा ''डार्विन का सिद्धांत'' लेकिन इसकी अहमियत कुछ खास नहीं होगी।.....

क्या आदमी कभी बंदर रहा होगा, इस सिद्धांत पर कितना यकीन होता है? दरअसल बरसों पहले डार्विन का यह सिद्धांत पढ़ा था कि सभी जीव एक आम पूर्वज से आते हैं। यह सिद्धांत परिवर्तन के साथ जीवन की प्रकृतिगत उत्पत्ति पर जोर देते हुए कहता है कि सरल प्राणियों से जटिल जीव विकसित होते हैं। मतलब आदमी पहले बंदर था या इसे यूं कहें कि बंदर धीरे-धीरे आदमी बन गया। डार्विन का सिद्धांत विकास की अवधारणा का सिद्धांत है। अब सवाल ये भी हैं यदि प्राकृतिक परिवर्तन होते-होते बन्दर से इन्सान बन गया तो आगे इन्सान क्या बनेगा! क्या वह पक्षियों की तरह उड़ने लगेगा?

हाल ही में चार्ल्स डार्विन के सिद्धांत को गलत ठहराते हुए केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री सत्यपाल सिंह ने कहा है कि इस मुद्दे पर अंतर्राष्ट्रीय बहस की जरूरत है, ''क्रमिक विकास का चार्ल्स डार्विन का सिद्धांत वैज्ञानिक रूप से सही नहीं है, इन्सान के पूर्वज इन्सान और बंदरों के पूर्वज बन्दर थे इसमें कोई समानता नहीं है। केंद्रीय मंत्री का कहना है कि ''सर्जक या सृष्टिकर्ता'' तो ब्रह्मा थे, उन्होंने मानव को धरती पर अवतरित किया है। इसके बाद वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक जगत से जुड़े लोगों ने एक ऑनलाइन पत्र में सत्यपाल सिंह से अपना बयान वापस लेने को कहा है। साथ ही वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने मंत्री की इस टिप्पणी की निन्दा की और कहा ''हम वैज्ञानिक, वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करने वाले तथा वैज्ञानिक समुदाय से जुड़े लोग आपके दावे से काफी आहत हैं।''

इस प्रकरण पर हर किसी की अपनी राय है लेकिन जिस तरीके से इस बयान के बाद वैज्ञानिक समुदाय की भावना आहत होने की बात सामने आई उससे यह साफ होता कि जो विज्ञान अभी तक तर्कों, खण्डनों, नये विचारों, आयामों और खोजों पर आधारित था क्या वह अब भावनाओं पर आ टिका है? क्या कुछ मजहबों की तरह अब उस विज्ञान की आस्था और भावना पर चोट होने लगेगी? जबकि विज्ञान में तो एक दूसरे के द्वारा उत्पन्न खोज का खण्डन और नये सिद्धांतों का प्रतिपादन वैज्ञानिकों द्वारा हुआ है? बहुत पहले वैज्ञानिकों की अवधारणा थी कि पसीने से भीगी कमीज में गेहूं की बाली लपेटकर अँधेरे कमरे में रख देने से 21 दिन बाद स्वत: ही चूहे पैदा हो जाते हैं। इसके बाद इस स्वत: जननवाद का खण्डन करते हुए वैज्ञानिकों की अगली पीढ़ी ने तर्क दिया कि नहीं ऐसा सम्भव नहीं बल्कि जीव से ही जीव पैदा होता है।

वर्ष 2008 में विकासवाद के समर्थक जीव-विज्ञानी स्टूअर्ट न्यूमेन ने एक साक्षात्कार में कहा था कि नए-नए प्रकार के जीव-जंतु अचानक कैसे उत्पन्न हो गए, इसे समझाने के लिए अब विकासवाद के नए सिद्धांत की जरूरत है। जीवन के क्रम-विकास को समझाने के लिए हमें कई सिद्धांतों की जरूरत होगी, जिनमें से एक होगा ''डार्विन का सिद्धांत'' लेकिन इसकी अहमियत कुछ खास नहीं होगी। उदाहरण के लिए, चमगादड़ों में ध्वनि तरंग और गूँज के सहारे अपना रास्ता ढूँढ़ने की क्षमता होती है। उनकी यह खासियत किसी भी प्राचीन जीव-जन्तु में साफ नजर नहीं आती, ऐसे में हम जीवन के क्रम-विकास में किस जानवर को उनका पूर्वज कहेंगे?

पश्चिम दुनिया में तर्कशास्त्र का पिता कहे जाने वाले अरस्तू को तो लोग बड़ा विचारक कहते हैं लेकिन यूनान में अरस्तू के समय हजारों साल से यह धारणा पुष्ट थी कि स्त्रियों के दांत पुरुषों की अपेक्षा कम होते हैं। अरस्तु की एक नहीं बल्कि दो पत्नियाँ थीं। वे गिन सकते थे लेकिन उन्होंने भी इस धारणा को पुष्ट किया। अरस्तु के कई सौ वर्षों बाद किसी ने अपनी पत्नी के दांत गिने और इस धारणा का खण्डन किया और बताया कि स्त्री और पुरुष दोनों में दांत बराबर संख्या में होते है। क्या इस सत्य से अरस्तु के मानने वालों की आस्था आहत होगी?

एक छोटी सी दूसरी घटना है, गैलीलियो तक सारा यूरोप यही मानता रहा कि सूरज पृथ्वी का चक्कर लगाता है। जब गैलीलियो ने प्रथम बार कहा कि न तो सूर्य का कोई उदय होता है, न कोई अस्त होता है। बल्कि पृथ्वी ही सूर्य के चक्कर लगाती है। तब गैलीलियो को पोप की अदालत में पेश किया गया। सत्तर वर्ष का बूढ़ा आदमी, उसको घुटनों के बल खड़ा करके कहा गया, तुम क्षमा मांगो! क्योंकि बाइबिल में लिखा है कि सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है, पृथ्वी सूर्य का चक्कर नहीं लगाती और तुमने अपनी किताब में लिखा है कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है तो तुम बाइबिल से ज्यादा ज्ञानी हो? बाइबिल, जोकि ईश्वरीय ग्रंथ है! जोकि ऊपर से अवतरित हुआ है!

गैलीलियो मुस्कुराया और उसने कहा, आप कहते हैं तो मैं क्षमा मांग लेता हूं। मुझे क्षमा मांगने में कोई अड़चन नहीं है। आप अगर कहें तो मैं अपनी किताब में सुधार भी कर दूं। मैं यह भी लिख सकता हूं कि सूरज ही पृथ्वी के चक्कर लगाता है, पृथ्वी नहीं। लेकिन आपसे माफी मांग लूं, किताब में बदलाहट कर दूं, मगर सचाई यही है कि चक्कर तो पृथ्वी ही सूरज के लगाती है। सचाई नहीं बदलेगी। मेरे माफी मांग लेने से सूरज फिक्र नहीं करेगा, न पृथ्वी फिक्रमंद होगी। मेरी किताब में बदलाहट कर देने से सिर्फ मेरी किताब गलत हो जाएगी।

हो सकता है सत्यपाल सिंह की निन्दा हो, इसे धर्म और राजनीति की तराजू में रखकर सवाल हो, विपक्ष का एक खेमा डार्विनवाद और उनके उपासक वैज्ञानिको का पक्ष ले। लेकिन मेरा मानना है यह विज्ञान के रूढ़ीवाद पर सवाल है। क्या इस विषय पर दोबारा शोध नहीं होना चाहिए कि एक व्यक्ति के पास 46 गुणसूत्र होते हैं और एक बंदर में 48 क्रोमोसोम होते हैं। इसे किस तरह स्वीकार किया जाये कि मनुष्य और बंदर का एक सामान्य पूर्वज था और उसने बंदर से इन्सान बनने के रास्ते पर गुणसूत्रों को खो दिया? आखिर क्यों हजारों सालों में एक भी बंदर इंसान नहीं बन पाया है। आखिर इसे किस तरह पचा सकते हैं कि अफ्रीकन बन्दर काले और यूरोपीय बन्दर गोरे रहे होंगे! जैसा कि आज इन भूभागों पर मनुष्य जाति का रंग है? जब पूर्वज साझा थे तो मनुष्यों में कद, रंग और भाषा का परिवर्तन क्यों हुआ? दूसरा यदि डार्विन के इस सिद्धांत को सही माने तो क्या इस तरह कह सकता हूँ कि आज कुछ बंदर जल, थल, आकाश और मरुस्थल में शोध कर रहे है, ट्रेन, बस, मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं जबकि उसके पूर्वज अभी भी वनों में उछल कूद रहे हैं?

-राजीव चौधरी

बोध कथा

आनन्द की खोज

एक कुत्ता कई दिनों से भूखा था। खाना खोजता फिरता था। चलते-चलते वह एक नदी के पास पहुंचा। तट पर एक वृक्ष था। वृक्ष पर पत्ते नहीं थे, केवल शाखाएं थीं। उनमें से एक शाखा पर एक रोटी लटक रही थी। वृक्ष का और रोटी का प्रतिबिम्ब पानी में पड़ रहा था। कुत्ते ने पानी की ओर देखा। समझा- सामने रोटी है। उसमें छलांग लगा दी। पानी हिला तो रोटी परे जाती प्रतीत हुई। वह और आगे बढ़ा तो रोटी और आगे जाती विदित हुई। इस प्रकार वह बार-बार आगे बढ़ता, बार-बार रोटी आगे बढ़ जाती। अन्त में मझधार में पहुंचा; डूबा और समाप्त हो गया।

अरे मनुष्य! तू भी तो भूखा फिरता है। जन्म-जन्म से आनन्द की प्यास तेरे चित्त में है। इसको खोजता फिरता है। तूने सोचा-जिसके पास धन है, वह सुखी है और मार दी धन के पानी में छलांग, किन्तु आनन्द तो मिला नहीं, आनन्द की रोटी आगे हो गई।

तूने सोचा कि विवाह में सुख है। पकी-पकाई रोटी मिल जाती है, सुख और शांति मिल जाती है। लगा दी छलांग विवाह के जल में, किन्तु सुख तो मिला नहीं। आनन्द की रोटी और आगे हो गई।

तूने सोचा कि आनन्द सन्तान में है। तूने लगा दी छलांग। पानी फिर हिल गया। रोटी और आगे हो गई।

इस प्रकार मान-सम्मान में, शासन में, मकान में, सम्पत्ति में कहीं भी आनन्द नहीं। अरे छलांग लगाना चाहते हो तो लगाओ, किन्तु आनन्द की रोटी मिलेगी नहीं। कुत्ते में यदि बुद्धि होती तो वह पानी में छलांग लगाने के स्थान पर निहारता ऊपर की ओर। वृक्ष पर चढ़ने का प्रयत्न करता, रोटी मिल जाती।

अरे मनुष्य! आनन्द की रोटी नीचे नहीं, वृक्ष के ऊपर है। आनन्द की इच्छा है तो ऊपर चढ़ो, नीचे मत गिरो!

- महात्मा आनन्द स्वामी

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

शिक्षा और विद्या

– डॉ. महेश विद्यालंकार

भौतिक उन्नति प्रगति, विकास और ज्ञान का सम्बन्ध शिक्षा से है। शिक्षा अक्षर ज्ञान, पुस्तकीय ज्ञान, सूचना संग्रह, अच्छे नम्बर और डिग्रियों तक सीमित है। शिक्षा शारीरिक सुख भोगों तक सीमित है। विद्या आत्मिक उन्नति परमात्म-चिन्तन और जीवन को श्रेष्ठ एवं पवित्र बनाती है। जीवन में धार्मिकता, आधुनिकता, नैतिकता, सदाचार शिष्टाचार आदि की भावना जाग्रत करती है। विद्या सुखी नीरोगी प्रसन्नता जीवन की कुंजी कहलाती है तभी कहा है, ''**विद्याविहीनः पशुभिः समानः**'' विद्या हीन व्यक्ति पशु के समान होता है। विद्या से ही व्यक्ति विद्वान बनता है। शिक्षा से तरह-तरह का ज्ञान तो एकत्र हो जायगा, मगर सच्चे अर्थ में आत्मज्ञानी तथा विद्वान नहीं हो सकता है। भारत सदा से विद्या का उपासक रहा है। यूरोप ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। मगर जीवन से विद्या और परमार्थ विद्या में पिछड़ गया। विद्या से ही मनुष्य सच्चे अर्थ में मानव बनता तथा कहलाता है। शास्त्र कहते हैं- ''विद्या सा या विमुक्तये'', सच्ची विद्या वह है जो हमें वचनों, बुराईयों, दोषों एवं अवगुणों से छुड़ाए। हमारे अन्दर प्रभुता से हटकर देवत्व की भावना जाग्रत करें। जो हमें जीवन का सत्य स्वरूप और सन्मार्ग बताए। सच्ची विद्या का पढ़ना-समझना जीवन का असली स्लेबस है। आज स्कूलों, कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में भौतिक ज्ञान व शिक्षा पर तो पूरा समय, शक्ति, धन लगाया जा रहा है। जीवन की असली आत्मपरमात्म विद्या पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उसी का परिणाम है कि आदमी सच्चे अर्थ में इन्सान नहीं बन पा रहा है। जिसमें इन्सानियत, मनुष्योचित, गुण, कर्म, स्वभाव और आकर्षण हो।

''**विद्या धर्मेण शोभते**'' विद्या धर्म से बढ़ती, फलती-फूलती और शोभा प्राप्त होती है। विद्या से ही जीवन में आर्ट ऑफ लिविंग की कला आती है। जीवन में यदि जीवन नहीं तो चाहे कितना भी भौतिक ज्ञान, सुख-साधन, भोग पदार्थ एकत्र कर लें तब भी जीवन अपूर्ण तथा अधूरा ही रहता है। शिक्षा स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग को बढ़ाती है और विद्या स्टैंडर्ड ऑफ लाईफ को ऊंचा ले जाती है। विद्या धर्म युक्त जीवन जीते हुए धर्म अर्थ काम मोक्ष तक ले जाती है। यही जीवन का सत्य लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वर्तमान भौतिक शिक्षा में कुछ पढ़ाया और बताया नहीं जा रहा है। इसलिए वर्तमान शिक्षा विद्या से रहित अधूरी है। वेद का सन्देश 'विद्या च अविद्या, च अविद्यो च'' भौतिक ज्ञान के साथ मात्र आध्यात्म विद्या दोनों का समन्वय करके चलो तभी जीवन-जगत में सुख-शान्ति प्रसन्नता विश्वबन्धुत्व की भावना बनेगी। उपनिषद भी कहते हैं ''**विद्यया अमृतं अश्नुते**'' विद्या से अमृतत्व (आनन्द) की प्राप्ति संभव है। शिक्षा से भौतिक सुख भोग पदार्थ तो मिल जायेंगे, मगर सच्चा आत्म आनन्द नहीं मिलेगा। सच्चे आनन्द के खजाने का ताला तो आत्मविद्या की कुंजी से ही खुलेगा। जीवन जगत को जितनी भौतिक भिक्षा (ज्ञान) की जरूरत है, उतनी ही आत्म विद्या की भी आवश्यकता है। तभी वर्तमान समस्याओं, उलझनों, विवादों, दु:खों, कष्टों अशान्ति आदि का समाधान संभव है। आज शिक्षा बढ़ रही है। जीवन की असली विद्या घट रही है। भारत का जीवन-दर्शन रहा है शिक्षा-विद्या, भोग योग, भौतिकता आध्यात्मिकता, शरीर-आत्मा, प्रकृति परमात्मा आदि का सन्तुलन एवं समन्वय करके चलो। तभी जीवन-जगत सन्मार्ग की ओर प्रेरित रहेगा। भारतीय शिक्षा दर्शन में विद्यार्थी और विद्यालय बोला जाता है। जिसका सीधा सम्बन्ध विद्या के साथ है, न कि शिक्षा के साथ है। शिक्षा का सम्बन्ध इहलोक के साथ है और विद्या का सम्बन्ध इह श्रेष्ठ जीवन तथा परलोक दोनों के साथ है।

विश्व पुस्तक मेला 2018 : मेरा अनुभव – आचार्य दिनेश शास्त्री

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 6 जनवरी से 14 जनवरी 2018 तक विश्व पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से लाखों का वैदिक साहित्य उचित मूल्य पर पाठकों को उपलब्ध करवाया गया। इस अवसर पर ऋषि दयानन्द का अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश हजारों की मात्रा में पाठकों (स्वाध्यायशील लोगों) हेतु मात्र दस रुपये में दिया गया। मेरा अनुभव कहता है कि यदि प्रत्येक हॉल में एक बड़ा स्टॉल (दुकान) आर्य समाज की होती तो निश्चित ही वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार अधिक होता और घर-घर तक वैदिक साहित्य पहुंचाने के लिए विश्वपुस्तक मेला एक अच्छा अवसर सिद्ध होता। इन 9 दिनों में हजारों लागों को वैदिक साहित्य की उचित जानकारी प्रदान करके उनको साहित्य दिया गया। नये लोग जो उच्च शिक्षित हैं, उनको अधिक से अधिक ऋषि दयानन्द का साहित्य और प्रमाणिक वैदिक साहित्य दिया गया। आज के दूषित वैचारिक वातावरण और पाखण्ड से मुक्त होने के लिए जन-मानस की प्रबल इच्छा है, लेकिन सही दिशा- निर्देश के अभाव में जनता भटक रही है। इस मेले के अवसर पर एक हॉल में एक स्टॉल परोपकारिणी सभा की थी, दो स्टॉल का स्थान गोविन्दराम हासानन्द का और दिल्ली सभा ने एक स्टॉल बच्चों के हॉल में और दस स्टॉल हॉल नम्बर 12 में ले रखे थे। प्रतिदिन 25-30 कार्यकर्त्ता अपना-अपना नि:शुल्क समय दे रहे थे। फिर भी हमें और अधिक कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता महसूस हुई। मैं अपना यथा अनुभव इसलिए लिख रहा हूं कि यदि आर्य-संस्थान, समाजें, सभायें दिल्ली सभा की तरह विश्व पुस्तक मेले में अपना-अपना या मिलकर एक-एक स्टॉल वैदिक साहित्य का लगाये तो वैदिक धर्म का अच्छा प्रचार-प्रसार हो सकता है। यदि कोई भी आर्य पुरुष या माता-बहिनें भी पुस्तक मेले के अवसर पर अपना कीमती समय सेवा हेतु देना चाहे तो आगामी मेले हेतु सभा में व्यक्तिगत या फोन द्वारा सम्पर्क करें। आप लोग धन देकर सहयोग कर सकते हैं और समय देकर कर सकते हैं, समय देने वाले लोगों के भोजन और निवास की व्यवस्था सभा करेगी। जो विद्वान या साहित्य के जानकार आचार्य आदि अपना समय मेले में अन्य मतवादियों को समझाने हेतु, शंकासमाधान हेतु या वैदिक साहित्य की जानकारी हेतु समय दे सके तो सभा ऐसे व्यक्तियों का सहयोग लेने हेतु तत्पर हैं। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न आर्य सभाओं का मिलकर या स्वतन्त्र अपने बल पर पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य का स्टॉल लगाना चाहिए और प्रत्येक स्टॉल पर एक-एक विद्वान भी हो और वैदिक साहित्य की उचित जानकारी प्रदान करने वाले जानकार भी हों। मैं अपने प्रत्यक्ष किये कार्य के आधार पर बता रहा हूं। मैंने प्राय: युवावर्ग के लोगों को वैदिक साहित्य और सत्यार्थप्रकाश की जानकारी दी। जिन-जिन को भी जानकारी दी थी या सम्पर्क कर सका वे सभी अपवाद को छोड़ कर वेद का सैट वैदिक साहित्य या फिर कम से कम सत्यार्थप्रकाश तो अवश्य है क्रय करके गये। आज भारत में तथा विदेशों में भी हजारों आर्यसमाजें और संस्थान हैं, लेकिन फिर भी सत्यार्थप्रकाश प्रत्येक घर में व प्रत्येक नागरिक तक नहीं पहुंचा है। मैंने सैकड़ों लोगों से बात की थी और पूछता कि आपने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा है, देखा है, जवाब होता नहीं, फिर हम लोग उनको सत्यार्थ प्रकाश की जानकारी देते और वे लोग खुशी-खुशी सत्यार्थप्रकाश लेकर जाते थे। अनेक मुस्लिम, पौराणिक, ईसाई और विदेशी पाठक भी सत्यार्थप्रकाश 10 रुपये में क्रय करके लेकर गये हैं। कुछ विदेशी पाठकों को नि:शुल्क सत्यार्थप्रकाश मैंने देना चाहा तो उन्होंने नि:शुल्क लेने से इन्कार (मना) कर दिया और 10/- देकर खरीदा। इस दिशा में आप सभी आर्यों से निवेदन है कि यदि आप वैदिक धर्म और आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करना चाहते हैं तो तन-मन-धन से दिल्ली सभा के साथ जुड़कर सहयोग करें। यदि समर्थ हैं तो अलग से स्टॉल लगायें।

मैंने पिछले कई वर्षों से विश्वपुस्तक मेले में प्राय: देखा है कि इस्लाम को मानने वाले भिन्न-भिन्न वर्गों में आते हैं और गैर मुस्लिमों को झूठ-मूठ बहकाते रहते हैं। इसी प्रकार ईसाई वर्ग भी अपना प्रचार-प्रसार करता है। आज के समय में सारे संसार में और विशेष तौर पर भारत में अज्ञान, अन्याय, आडम्बर, पाखण्ड आदि बुराईयां बहुत फैल रही हैं। इनका समाधान और पर्दाफाश करने हेतु विश्व पुस्तक मेला प्रगति मैदान दिल्ली बहुत ही अच्छा अवसर है, स्थान है। यदि कोई व्यक्ति या आर्य संस्थान इस विषय में कार्य करने हेतु जानकारी प्राप्त करना चाहे तो दिल्ली सभा आपका सहयोग करने हेतु सदा तैयार है। आप सहयोग करना चाहे तन-मन-धन से तो हम लेने हेतु भी तैयार है। हमारा मात्र एक लक्ष्य है, वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार हो। ऋषि दयानन्द का स्वप्न पूर्ण हो। यदि आर्य बन्धु, परिवार, समाज ओर संस्थान सत्यार्थप्रकाश ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार करना चाहे तो आप सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार हेतु सहयोग कर सकते हैं, जिससे सभा आगामी वर्ष 10,00,000 सत्यार्थप्रकाश मात्र 10/- में दे सके।

पुस्तक परिचय

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

स. भगत सिंह के जीवन विकास पर जिन घटनाओं ने गहन प्रभाव डाला, उनमें से एक साका जलियांवाला बाग था जो 13 अप्रैल 1919 को घटित हुआ, जिसमें जनरल डायर व उसके सिपाहियों ने असंख्य निहत्थे मर्दों, औरतों व नन्हें बच्चों का कत्लेआम किया था। इस दु:खांत ने भगत सिंह को अन्दर तक झंझोड़ कर रख दिया। वे उस वक्त 12 साल की आयु के थे। अगले दिन स्कूल जाने की बजाए भगत सिंह ने जलियांवाला बाग जाने के लिए रेलवे स्टेशन से अमृतसर की गाड़ी पकड़ ली। वहां पहुंच कर उन्होंने अपनी जेब से एक कांच की शीशी निकाली और निहत्थे व मासूम भारतीयों पर बर्तानवियों के जुल्म की निशानी के तौर पर मासूम लागों के रक्त से सनी मिट्टी उस में भर ली।.... शहीद-ए-आज़म भगत सिंह ने जब भी समय मिला अपने संस्मरणों को कलमबद्ध किया। इन्हीं दस्तावेज़ों को श्री अभय सिंह संधू ने संकलित किया और '**शहीद-ए-आज़म भगत सिंह की जेल डायरी** (दस्तावेज)'' नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाया। आप भी इस अनमोल रत्न को गणतन्त्र दिवस व स्वाधीनता दिवस के अवसर पर या किसी अन्य उत्सव पर अपने ईष्टमित्रों-रिश्तेदारों को भेंट कर सकते हैं।

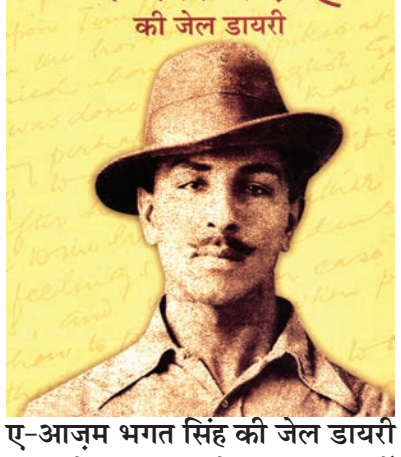

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रान्तीय सम्मेलन सम्पन्न

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रान्तीय सम्मेलन 29 से 31 दिसम्बर तक महू में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में प्रान्त की विभिन्न आर्य समाजों से लगभग 850 सदस्यों ने भाग लिया। सम्मेलन में महिलाओं एवं बच्चों भारी संख्या में उपस्थिति भी प्रशंसनीय रही। कार्यक्रम का शुभारम्भ सभा प्रधान श्री इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा ध्वजारोहण से किया गया। तीन दिवसीय कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः 8:30 से 10:30 बजे तक यज्ञ तत्पश्चात् भजन व आध्यात्मिक चर्चा होती रही। दोपहर के सत्र में युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, सनातन संस्कृति और आर्य समाज विषय पर व्याख्यान, संगठनात्मक एवं सैद्धान्तिक गोष्ठी, सामाजिक विचारधारा से ओत-प्रोत कवि सम्मेलन आयोजित किए गए। युवा सम्मेलन में मुख्य वक्ता श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा रहे।

सम्मेलन के अवसर पर मंचस्थ सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, डॉ. अन्नपूर्णा आचार्या, डॉ. सोमदेव शास्त्री, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के मन्त्री श्री सतीश चड्डा एवं अन्य अतिथिगण।

अध्यक्षता श्री सुरेश आर्य अध्यक्ष खादी ग्रामोद्योग मध्य प्रदेश शासन ने की अन्य वक्ताओं में श्री समीर गांधी, श्री रवि आर्य एडवोकेट, श्री ऋषि तिवारी एडवोकेट ने अपने-अपने सारगर्भित विचार प्रकट किये।

महिला जाग्रति सम्मेलन डॉ. अन्नपूर्णा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। महिला जाग्रति सम्मेलन की मुख्य अतिथि श्रीमती सुषमाजी चौधरी, इन्दौर व विशिष्ट अतिथि श्रीमती सुमन जी ज्ञानी, इन्दौर ने अपने-अपने विचार प्रकट किये। महिला जाग्रति सम्मेलन की वक्ता डॉ. गायत्री जी, श्रीमती गीताजी आर्य, डॉ. उषाकिरण जी, श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा, काव्यपाठ श्रीमती बिन्दू पंचोली, श्रीमती सरिता आर्य, भजन सुश्री निधि शर्मा व सविता शर्मा ने प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा, सुश्री निधि शर्मा एवं श्रीमती सरिता आर्य ने किया।

प्रान्तीय सम्मेलन में संस्कृत को म. प्र. शिक्षा बोर्ड द्वारा 10वीं कक्षा से बन्ध करने के विरोध में प्रस्ताव पारित किया गया। इसी प्रकार मध्य प्रदेश में गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने का भी प्रस्ताव पारित किया गया। दोनों प्रस्ताव भारत शासन व मध्य प्रदेश शासन को ज्ञापन प्रेषित किये गये। कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रति समर्पित व जिनका योगदान समाज को मिलता रहा ऐसे वयोवृद्ध आर्यजनों का अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई, आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, होशंगाबाद, डॉ. अन्नपूर्णाजी, देहरादून, श्री सुरेश आर्य अध्यक्ष खादी ग्रामोद्योग म.प्र. शासन, डॉ. धर्मपाल शर्मा, उपायुक्त वाणिज्यिक, डॉ. गायत्री जी दिल्ली, श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अनेक आर्य नेताओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री

मातृशक्ति

दांतों की सफाई

शारीरिक स्वास्थ्य के लिये दाँतों को सदा स्वच्छ रखना परम आवश्यक है। दाँतों को स्वच्छ न रखने से जहां कीड़ा लगना, मसूढ़े फूलना, दर्द होना, पायेरिया आदि दाँतों के रोग उत्पन्न हो जाते हैं वहीं दाँतों का रोगी दाँतों से भाजन (भली प्रकार चबा भी नहीं) पाता। भोजन भली प्रकार न चबाने के कारण तथा भोजन पचाने में सहायक, स्वास्थ्यप्रद दाँतों का लुआब भोजन में न मिलने के कारण भोजन भली प्रकार नहीं पचता। अतः प्रतिदिन प्रातः काल दन्तधावन द्वारा दाँतों तथा जिह्वा को साफ रखना परम आवश्यक है। नियम पूर्वक दाँतों को साफ रखने से मुख की दुर्गन्धि, दाँतों का मैल और कफ की निवृत्ति होती है। अन्न में रुचित तथा चित्त में प्रसन्नता आती है और दाँत वृद्धावस्था तक मजबूत रहते हैं।

मालिश :- यदि आप अपने बच्चों को हमेशा जवान देखना चाहते हैं तो उसके लिए कोई वैज्ञानिक उपचार की आवश्यकता नहीं है नित्य प्रति तेल की मालिश किया करें। दुबले और कमजोर मनुष्य को मोटा और बलवान् तथा मोटे व बेडौल मनुष्य को सुन्दर और सुडौल बनाने का मालिश ही एक मात्र सरल तथा सर्वोत्तम उपाय है। नित्य प्रातः शरीर पर मालिश करने से नेत्र ज्योति बढ़ती है। शरीर की त्वचा नरम, लचकीली, चमकदार तथा चिकनी हो जाती है। फोड़ा, फुन्सी आदि चर्म-विकार नहीं होते।

– आचार्य भद्रसेन

साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्यसमाज के संस्थापक, युग प्रवर्त्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 194वें जन्मोत्सव

(दयानन्द दशमी तद्नुसार 10 फरवरी, 2018 की)

हार्दिक शुभकामनाएँ

सौजन्य से :

गाय के घी के सुप्रसिद्ध विक्रेता

सुरेश अग्रवाल (9811822000), अनुराग गोयल (9818539818)

ओम प्रकाश सुरेश कुमार (ओम प्रकाशजी क्रीम वाले)

58, बाग दीवार, फतेहपुरी, दिल्ली-110006, दूरभाष : 011-23978519

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्त्वावधान में

आर्य परिवार

होली मंगल मिलन समारोह

फाल्गुन पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् 2074 तद्नुसार वीरवार 1 मार्च, 2018 सायं 3-30 से 7-15 बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,

राजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1

God Soul and Prakrti (Traitwad)

Veda Prarthana - 30

- Acharya Gyaneshwarya

बालादेकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते। ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया।।

Baladekamaniyaskam ut ekam neva drshyate. Tatah pari shvajiyasi devata sa mam priya. (Atharva Veda 10:8:25)

Ekam one thing/entity (Prakrti), subatomic physical matter aniyaskam is much smaller than balad the tip of hair, ut ekam and the next one thing/entity (soul) na eva drshyate is invisible, is not detectable by physical means. Tatah a third entity different from the other two pari shvajiyasi is intimately in contact with them (the other two), sa devata that Divine Entity (God, Eeshwara) mam priya is most dear to me.

In the whole universe, whatever we can see, directly apprehend or have direct cognizance of; inder something to be likely; read or hear about something or consider it probable; at its most basic root level consists of only three eternal things, God, the Soul and Prakriti (physical matter in the extremely minute subatomic state), there is nothing else, no fourth thing. God is the agentive cause for the creation of the universe, prakriti is the material cause of universe, and souls are the consumers for whose benefit the universe is created.

The first eternal thing, prakriti is innately inert, it has no innate activity or consciousness. The prakriti at its most primal level is composed of three types of extremely minute subatomic particles (called mool tatwa) with the following innate properties:satwa (full of energy but calm), rajas (full of energy but agitated) and tamas (inert, dull, no energy)[1]. the other characteristics of these subatomic particles are that they are innately indestructible, and even though they are extremely minute, they still have shape, form and dimensions whereby when they combine with each other, one particle cannot enter inside another, only displace it in one or the other direction. Lastly, these particles potentially can be measured by scientists like other physical objects2 (in contrast to God or soul: see later). From these primal root particles the whole universe is made. The earth, sun, moon, planets as well as other stars and galaxies are all eventually made of these three types of particles. These subatomic extremely minute particles in this Veda mantra have been metaphorically called as much smaller than the tip of hair.

From time to time, physical matter is either activated and transformed by God's creative power into the manifest universe as we know it (srishti), or inactivated and goes through dissolution (pralaya) back into its dormant primal state. During pralaya the three types of the mool tatwa exist in a balancd primal state but upon activation they may change their apparent characteristics such as shape or form when they combine with each other (or among themselves) in various combinations and proportions to make the manifest universe consisting of the five gross elements (sthool tatwas) of nature/universe namely Akasha (space), Vayu (air or gasses things), Agni (fire, light, or energy), Jala (water or liquids) and Prithvi (earth or solid things). All nonliving objects, as well as physical bodies of all living things, are composed of prakriti (matter). Our human body, various animals, birds, insects, plants, trees, fruits, vegetables, herbs are all made of prakriti. Similarly, the foods we eat, the clothes we wear and things we make our houses with for shelter are also all made of prakriti. Although, as stated before prakriti at the level of basic root particles is innately indestructible, yet it keeps changing its shape and form, for example the food we eat gets digested and then helps make our blood, muscles, bones and other body tissues. When we die our physical body (mitti or rakh ka putala) made from matter begins to disintgrate and will end as ashes (either by cremation or burial). Because prakriti is prone to change, metaphorically, all living and non-living things arose from the ashes (extremely minute subatomic particles i.e. physical matter) and will end as ashes.

The second eternal thing is soul and it is a conscious entity. The soul is extremely small and at any given time is ekdeshi-exists in one place only. The soul, however, is not made of prakriti. Therefore, unlike prakriti, soul is invisible because it has no shape or form, does not occupy any space. Therefore, the soul cannot be measured by scientists like other physical objects made of prakriti. Moreover, the soul being a conscious entity enters the physical body made of prakriti and activates and controls it, this is how the soul performs its functions through the physical body. The soul because of its conscious energy is the ultimate center of all learning (thought and knowledge); desires and feelings (love, jealousy, happiness, suffering); and karma (actions or deeds). It is the soul that enables us to see, hear, eat, walk, run, play and do other activities. The soul, however, can only do these activities when it joins prakriti to have a living physical body with various senses such as eyes and ears (all made of prakriti). Without the physical body, the soul cannot do anything external in the world. The entity which sees an object is the soul, where as the entity which enables us to see outside objects is the eye. Similarly, the entity which experiences happiness or sorrow is the soul, where as the entities that enables us to experience happiness or sorrow are our mind, chit, intellect and ego (together they are called antahkaran and are all made of prakriti).

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

वृक्षाणां नामानि - 40

गतांक से आगे....

आक	- अर्क:
आँवला	- आमलक:
आड़ू	- आर्द्रालु:
अंजीर	- अंजीर:
अखरोट	- अक्षोट:
अंगूर	- द्राक्षा, मृद्वीका
आबनूस	- तमालवृद्वा:
अमरूद	- बीजपूर:
अशोक	- अशोक:
आम	- सहकार:, रसाल:, आम्रम्
इमली	- तिन्तिडीकम्
इलाइची	- एला
कल्पवृक्ष	- कल्पवृक्ष:
कटहल	- पनस:
कदम्ब	- नीप:
करौंदा	- करमर्दक:
केला	- कदली
खजूर	- खर्जूरम्
गूलर	- उदुम्बरम्
चीड़	- भद्रदारु:
चन्दन	- चन्दनम्
चाय	- चायम्
जामुन	- जम्बू
ढाक	- पलाश:
ताड़	- तालवृक्ष:
तुलसी	- तुलसिका
देवदारु	- देवदारु:, देववृक्ष:
धतूरा	- धत्तूर:
नींबू	- जम्बीरम्
नारियल	- नारिकेल:
नाशपाती	- अमृतफलवृक्ष:
नीम	- निम्बवृक्ष:
पारिजात	- पारिजात:
पाकड़	- प्लक्ष:
पान	- ताम्बूलम्
पपीता	- मधुकर्कटीवृक्षम्
पीपल	- अश्वत्थ:
बरगद	- वटवृक्ष:
महुआ	- मधूक:
मुसम्मी	- मातुलुंग:
मेंहदी	- मेन्धिका
लीची	- लीचिका
लिसोड़ा	- श्लोष्मातक:
रेंड़	- एरण्ड:
शीशम	- शिंशपा
शरीफा	- सीताफलवृक्ष:
साल	- साल:
संतरा	- नारंगम्
सेव	- सेवम्

- क्रमश: -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग — ऐसे दिलजले उपदेशक!

बहुत पुरानी बात है। देश का विभाजन अभी हुआ ही था। करनाल जिला के तंगोड़ ग्राम में आर्यसमाज का उत्सव था। पं. शान्तिप्रकाशजी शास्त्रार्थ महारथी, पण्डित श्री मुनीश्वरदेवजी आदि कई मूर्धन्य विद्वान् तथा पण्डित श्री तेजभानुजी भजनोपदेशक वहाँ पहुँचे। कुछ ऐसा वातावरण बन गया कि उत्सव सफल होता न दीखा। पण्डित श्री शान्तिप्रकाशजी ने अपनी दूरदर्शिता तथा अनुभव से यह भाँप लिया कि पण्डित श्री ओमप्रकाशजी वर्मा के आने से ही उत्सव जम सकता है अन्यथा इतने विद्वानों का आना सब व्यर्थ रहेगा।

पण्डित श्री तेजभानुजी को रातों-रात वहाँ से साईकल पर भेजा गया। पण्डित ओमप्रकाशजी वर्मा शाहाबाद के आस-पास ही कहीं प्रचार कर रहे थे। पण्डित तेजभानु रात को वहाँ पहुँचे। वर्माजी को साईकल पर बिठाकर तंगोड़ पहुँचे। वर्माजी के भजनोपदेश को सुनकर वहाँ की जनता बदल गई। वातावरण अनुकूल बन गया। लोगों ने और विद्वानों को भी श्रद्धा से सुना।

प्रत्येक आर्य को अपने हृदय से यह प्रश्न पूछना चाहिए कि क्या ऋषि के वेदोक्त विचारों के प्रसार के लिए हममें पण्डित तेजभानुजी जैसी तड़प है? क्या आर्यसमाज की शोभा के लिए हम दिन-रात एक करने को तैयार हैं। श्री ओमप्रकाशजी वर्मा की यह लग्न हम सबके लिए अनुकरणीय है। स्मरण रहे कि पण्डित तेजभानुजी 18-19 वर्ष के थे, जब शीश तली पर धरकर हैदराबाद सत्याग्रह के लिए घर से चल पड़े थे। अपने घर से सहस्त्रों मील की दूरी पर धर्म तथा जाति की रक्षा के लिए जाने का साहस हर कोई नहीं बटोर सकता। देश-धर्म के लिए तड़प रखनेवाला हृदय ईश्वर हमें भी दे।

-प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन

1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

महर्षि दयानन्द जी के नाम पर सड़क का नामकरण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रतिष्ठित आर्यसमाज लक्ष्मी नगर के सहयोग से लक्ष्मी नगर मंगल बाजार, आर्यसमाज मन्दिर मार्ग का नामकरण पूर्वी दिल्ली नगर निगम की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग किया जाएगा। शिलान्यास समारोह 3 फरवरी को आयोजित होगा। नामकरण शिलापट्ट का अनावरण श्रीमती नीमा भगत, महापौर पूर्वी दिल्ली के कर-कमलों से किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सन्तोष पाल, नेता सदन पूर्वी दिल्ली नगर निगम होंगे। - ***मनुदेव, प्रधान***

बोधोत्सव आयोजित

आर्य समाज तात्याटोपे नगर, भोपाल के तत्त्वावधान में वार्षिकोत्सव एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव 11 से 14 फरवरी 2018 को आर्य समाज तात्याटोपे नगर, भोपाल प्रांगण में मनाया जा रहा है। -***जानकी मोहन जौहरी, मंत्री***

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनिया का

वार्षिकोत्सव समारोह

6 फरवरी, 2018 सायं 4 से 7 बजे
अध्यक्षता : महाशय धर्मपाल
वि.अतिथि : श्री प्रकाश आर्य जी एवं श्री जोगेन्द्र खटट्र जी
निवेदक - प्रवीण आत्रे, प्रधानाचार्य

वैदिक विदुषी की आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किए जाने वाले माता अमृतबाई कन्या संस्कृतकुलम् के संचालन एवं व्यवस्था के लिए आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त विदुषी महिला की आवश्यकता है। आकर्षक वेतन एवं सुविधाएं। संस्कृत कुलम में समस्त व्यवहार संस्कृत भाषा में ही किए जाते हैं। अत: संस्कृत भाषा/व्याकरण का पूर्ण पारंगत अभ्यर्थी जो दिल्ली में रहकर निरन्तर अपनी सेवाएं प्रदान कर सके, अपना आवेदन पत्र सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेज देवें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। - ***महामन्त्री***

प्रवेश प्रारम्भ

जीवन प्रभात आवासीय विद्यालय बिजनौर रोड जलालाबाद में गुरुकुलीय पद्धति द्वारा पठन-पाठन के साथ-साथ आधुनिक विषयों तथा एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम कक्षा 5 से 8 तक अंग्रेजी माध्यम तत्पश्चात् यू.पी. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम द्वारा नि:शुल्क शिक्षण व्यवस्था हेतु वर्ष 2018-2019 के लिए प्रवेश प्रारम्भ हैं आवेदन तिथि 10 मार्च तक, प्रवेश परीक्षा 15 मार्च। परीक्षाफल 15 मार्च सायं 5 बजे। सम्पर्क करें -

कु. सन्तोष बाला आर्या, प्रबन्धक
ए/11 आदर्श नगर, नजीबाबाद
जनपद बिजनौर (उ.प्र.)-246763
मो. 9897172532

पत्रकार चाहिए

महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों, मन्तव्यों, आर्यसमाज की मान्यताओं, कार्यों और गतिविधियों को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को एक सुयोग्य पत्रकार की आवश्यकता है जो प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया तथा सोशल मीडिया के माध्यम से किसी भी गतिविधि को वायरल करा सकने में सक्षम हों। पत्रकारिता में स्नातक/परास्नातक महानुभाव अपना बायोडाटा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें अथवा सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेजें। आर्य महानुभावों को प्राथमिकता। वेतन योग्यतानुसार। - ***महामन्त्री***

वैदिक पुस्तकालय हेतु पुस्तकें दान दें

सभी आर्य भद्र महापुरुषों और माताओं-बहनों को सूचित किया जाता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक विशेष व विशाल पुस्तकालय निर्माण की तैयारी आरम्भ की जा चुकी है। यह पुस्तकालय आधुनिक सुविधाओं से युक्त होगा। इस पुस्तकालय में सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय ''ऋषि दयानन्द का सम्पूर्ण साहित्य के सभी संस्करण, ऋषि दयानन्द और अन्य सभी आर्य महापुरुषों के जीवन-चरित्र, राष्ट्रीय एवं आर्य समाज विषयक ऐतिहासिक पुस्तकें, विभिन्न मत-सम्प्रदायों से सम्बन्धित विभिन्न भाषाओं में साहित्य का संग्रह एक ही पुस्तकालय में उपलब्ध करवाने का प्रयास है। प्राचीन और नवीन हर तरह की पुस्तकें इस पुस्तकालय में संग्रहीत होगी। इस पुस्तक संग्रहालय में साहित्य को सुरक्षित करने की भी विशेष योजना है।

नोट : यदि आपके पास ऐसी कोई विशेष पुस्तकें हो जो वर्तमान समय में अप्राप्त है तो आप ऐसी पुस्तकें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को पुस्तकालय हेतु दान दे सकते हैं।

दानदाता कृपया सम्पर्क करें -
आचार्य दिनेश शास्त्री
मो. 7597454681, 7737904950

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -

47. श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर 5000
48. आर्यसमाज कालकाजी 4000
49. आर्यसमाज मस्जिद मोठ 5100
50. आर्यसमाज द्वारका 5000

- ***क्रमश:***

आप भी पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें। 100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

शोक समचार

श्री मनुदेव आर्य को मातृशोक

आर्यसमाज लक्ष्मी नगर दिल्ली के प्रधान श्री मनुदेव आर्य जी की पूज्य माता श्रीमती सुशीला देवी शर्मा जी का 13 जनवरी, 2018 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उनके पैत्रक गांव में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
सिक्के वाले मात्र 500/-रु. सैंकड़ा | बिना सिक्के मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

कार्यक्रम स्थगित : समस्त आर्यजनों एवं पाठकों की सूचनार्थ है कि आर्यसमाज जहांगीरपुरी का उद्घाटन समारोह 4 फरवरी, 2018 किन्तु अपरिहार्य कारणों से 11 मार्च, 2018 के लिए स्थगित हो गया है। आर्यजनों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - महामन्त्री

शुद्धि पत्र : आर्य सन्देश के पिछले अंक में प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2018 की तिथियां गलत प्रकाशित हो गई थीं, कृपया उसे सुधारकर 25-26-27-28 अक्तूबर, 2018 पढ़ा जाए। - ***सम्पादक***

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 1/2 फरवरी, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 31 जनवरी, 2018

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

52 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

आर्यसमाजें उत्साह के साथ आयोजित करें

194वाँ

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10)
10 फरवरी, 2018 (शनिवार)

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणास्रोत आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस** इस वर्ष **10 फरवरी** को है। आप सबसे प्रार्थना है कि इसके आयोजन की तैयारियां अभी से आरम्भ कर दें। इस दिन जन्मोत्सव शुभकामना के बैनर लगाकर **सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या** आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द जीवनी आदि सभा कार्यालय में उपलब्ध है, प्राप्त करने के लिए मो. 9540040339 पर सम्पर्क करें। शुभकामना बैनर आदि के डिजाइन **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। डिजाइन व्हाट्सएप्प आदि द्वारा मंगाने के लिए श्री सन्दीप आर्य 9650183339 से सम्पर्क करें। - *महामन्त्री*

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह